परमेश्वर द्वारा दिए नमूने को मानना (1 तीमुथियुस 4)

''यदि तू भाइयों को इन बातों की सुधि दिलाता रहेगा, तो मसीह यीशु का अच्छा सेवक ठहरेगा: और विश्वास और उस अच्छे उपदेश की बातों से, जो तू मानता आया है, तेरा पालन - पोषण होता रहेगा'' (1 तीमुथियुस 4:6)।

अध्याय 4 में उन अगुओं की आवश्यकता का पता चलता है जिनका वर्णन अध्याय 3 में किया गया है। पवित्र लोगों को इकट्ठा रखने के लिए अगुआई करने वालों के न होने पर (देखिए इब्रानियों 13:7), कलीसिया में शैतान के चेले घुस आएंगे और लोगों को परमेश्वर से दूर जाने को उकसाएंगे (नोट यूहन्ना 8:43-45; 2 कुरिन्थियों 11:13-15; रोमियों 16:17, 18)। अध्याय 4 नाटकीय ढंग से झूठे और परमेश्वर के वचन से दूर करने के लिए उकसाने वाले नाकाम अगुओं से (4:1-5) ओजस्वी सुसमाचार प्रचारकों (इवेंजलिस्टों) तक ले आता है, जो लोगों को परमेश्वर के वचन के द्वारा उत्साहित करते हुए अपना और सुनने वालों का उद्धार करते हैं (4:12ख-16)। यह परिवर्तन ''खरी शिक्षा'' (4:6-8) की खुराक से ही सम्भव होता है और प्रेरितों द्वारा दिए गए नमूने से दिखाया जाता है (4:9-12क)। इस प्रकार इस अध्याय से पता चलता है कि परमेश्वर के वचन की बहुत आवश्यकता है और यह कि इसका इस्तेमाल कैसे किया जाना चाहिए।

पाठ 10: विश्वास से गिरने की योजना (4:1-5)

उनके भटकने की निश्चितता (आयत 1क)

अध्याय 4 का पहला ही शब्द ''परन्तु'' पौलुस द्वारा अच्छे व्यवहार वाले लोगों (अध्याय 3) से ''दुष्टात्माओं की शिक्षाओं'' (4:1) वाले लोगों की ओर मोड़ने का संकेत देता है।

हमें इस चेतावनी पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि पवित्र आत्मा ने इसे ''स्पष्टता से''

बताया है। बिल्कुल ऐसा ही होगा और हमें इस पर यकीन कर चौकस रहना चाहिए। कितने दु:ख की बात है कि सच्चाई बताने का दावा करने वाले लोग इससे फिरकर झूठ का प्रचार करते हैं! यह और भी दुख की बात है कि भोले भाले लोग पवित्र आत्मा की चेतावनी पर ध्यान न देकर शैतान की युक्तियों को ज़्यादा मानते हैं (1 यूहन्ना 4:1; मत्ती 24:23-26; प्रेरितों 17:11)।

पौलुस ने कहा कि ''आने वाले समयों में'' यह होना था। तीमुथियुस को उसकी चेतावनी थी कि ''हो सकता है कि तुझ्हें अभी दिखाई न दे, पर सावधान रहना, ज़्योंकि यह सब होगा अवश्य!'' आत्मा ने यह भी पुष्टि की कि ''कितने लोग ... विश्वास से बहक[1] जाएंगे।'' ''बहकना''[2] शब्द की परिभाषा में ऐसा होने के कई ढंग बताए गए हैं। जब सदस्य साइड में खड़े होने लगें, पीछे हटें, कहीं और जाने लगें, या उनका विश्वास डगमगाने वाला हो जाए, तो *सावधान* हो जाएं, ज़्योंकि ''विश्वास से गिरना'' शुरू हो चुका है!

ऐसा होने का कारण (आयतें 1ख, 2)

जब सदस्य ''भरमाने वाली आत्माओं'' (मक्कार लोगों) और ''दुष्टात्माओं की शिक्षाओं'' (विकृत वाचाओं) की ओर झुकने लगें तो सावधान हो जाएं। भरमाने वालों के स्वभाव पर ध्यान दें।[3] वे उन्हें ''जिनका विवेक मानो जलते हुए लोहे से दागा गया है'' इस्तेमाल करके लोगों को भरमाते हैं (4:2)। कितनी बार ये लोग एक मण्डली से दूसरी में जाकर, बहुत से लोगों को भड़काकर कलीसिया में फूट डाल देते हैं!

उनके इतना असरदायक होने का कारण यही है कि वे ''दुष्टात्माओं की शिक्षाओं'' को फैलाते हैं। तथ्य यह है कि अनुवादित शब्द ''दुष्टात्माओं''[4] के अर्थ से यह भी स्पष्ट हो सकता है कि ये शिक्षाएं भोले भाले और संदेह न करने वाले उन लोगों को जिन्हें लगता है कि सिखाने वाले सत्य ही बताएंगे भ्रमित करने वाली अर्थात फंदे में फंसाने वाली हैं (1 पतरस 2:1-3; रोमियों 16:17, 18)। हमारे समय में यह कहना कि ''शैतान ने मुझसे यह करवा दिया'' किसी के अपनी गलती को मानने के बजाय सच्चाई के अधिक निकट हो सकता है। यह तो सत्य है ही, आपको यूहन्ना 8:44 में मसीह का मूल्यांकन याद होगा: ''तुम अपने पिता शैतान से हो, और *अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो*। ... जब वह झूठ बोलता है, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; ज़्योंकि वह झूठा है, वरन झूठ का पिता है।'' हम जब शैतान के भ्रमित करने वाले प्रभाव के सामने झुक जाते हैं, तब भी ऐसा *हम अपनी ही इच्छा* या अपने फैसले से करते हैं।

शिक्षा में बिगाड़ होने के बारे में स्पष्टता से बताया गया है (आयतें 3-5)

पौलुस ने मसीही लोगों को उनका सामना करने के लिए तैयार किया जिन्होंने विश्वास से गिरकर, लोगों को विवाह करने से रोकना (देखिए इब्रानियों 13:4; 1 कुरिन्थियों 9:5; इफिसियों 5:23-31) और उन्हें भोजनों के खाने से मना करने की आज्ञा देनी थी।[5] इस

भविष्यवाणी की रोशनी में यह बात अद्‌भुत तो है पर आश्चर्यजनक नहीं है कि आज कई सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों में ये दोनों बातें ही पाई जाती हैं। बार्कले ने इन गलत शिक्षाओं के आरज़्भ होने की चर्चा की है:

> दूसरी शताज़्दी के अन्त के निकट लिखते हुए, इरेनियुस बताता है कि किस प्रकार सेटरनिनुस के कुछ अनुयायी ''यह ऐलान करते हैं कि विवाह व वंश शैतान की ओर से हैं। इसी प्रकार कई अन्य पशुओं के भोजन से मना करते हैं और इस प्रकार एक कल्पित आत्मसंयम के द्वारा हज़ारों लोगों को पीछे कर देते हैं'' (इरेनियुस, *अगेंस्ट हेयरसिज़,* I, 24, 2)। इस प्रकार की बात चौथी शताज़्दी के भिक्षुओं और वैरागियों के मन में आई। वे मनुष्यों से पूरी तरह से अलग जाकर मिसर के जंगल में रहते थे। वे शरीर को नियन्त्रण में रखकर जीवन बिताते थे। एक ने तो कभी पका हुआ अन्न ही नहीं खाया और अपनी ''शरीरहीनता'' के लिए प्रसिद्ध था।[6]

कुछ प्रारज़्भिक मसीहियों ने इन शिक्षाओं के विरुद्ध कड़े कदम उठाए थे। जैसा कि *अपोस्टलिक कैनन्स* (#51) से स्पष्ट होता है:

> यदि कोई अध्यक्ष, प्रीस्ट या डीकन या प्रीस्टों में से कोई भी, तप (अर्थात अनुशासन के लिए) के आधार पर नहीं बल्कि इस बात को भूलकर कि सब वस्तुएं बहुत अच्छी हैं और यह कि परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री दोनों को बनाया, परमेश्वर की कारीगरी की निंदा और बदनामी करते हुए उन्हें बुराई मानकर उनसे घृणा करता है, विवाह से और मांस और दाखरस से परहेज़ करता है तो उसे या तो सुधार की या फिर उतारकर कलीसिया से बाहर करने की आवश्यकता है।[7]

इस चेतावनी में इस प्रकार के परहेज की मूर्खता बताई गई है। परमेश्वर ने मनुष्य को शरीर बनाया और उसे देखकर कहा कि जो कुछ उसने किया है वह अच्छा है। मनुष्य जाति को तो परमेश्वर के स्वरूप पर ही बनाया गया था (उत्पज़ि 1:26, 27)। परमेश्वर ने विवाह की स्थापना करके कहा कि यह अच्छा है (उत्पज़ि 2:18-24)। मूर्खतापूर्ण तप से हो या शैतान की प्रेरणा प्राप्त किसी धर्म गुरु की शिक्षा के आदेशों से, जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे *मनुष्य अलग न करे।* इसके अलावा आरज़्भ में परमेश्वर ने यह ऐलान किया था कि ''सब चलने वाले जन्तु तुज़्हारा आहार होंगे'' (उत्पज़ि 9:3)। जिसे परमेश्वर ने अच्छा और शुद्ध कहा है, हमें उसे तुच्छ या अशुद्ध कहकर ठुकराने या मना करने का कोई अधिकार नहीं है (प्रेरितों 10:12-16, 28)। इसलिए प्रश्न यह है कि हमें परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए या मनुष्य की। हर हाल में, रोमियों 3:4 की बात ही मानी जानी चाहिए! ''... परमेश्वर सच्चा और हर एक मनुष्य झूठा ठहरे ...।''

हमेशा की तरह, मनुष्य द्वारा किए बिगाड़ को परमेश्वर साफ़ बता देता है। पौलुस ने इस बात की पुष्टि की कि परमेश्वर का बनाया हुआ हर जीव अच्छा है (उत्पज़ि 1:24, 25) और

सच्चाई को मानने और जानने वालों को उसे धन्यवाद के साथ ही लेना आवश्यक है। मांस परमेश्वर के वचन (अर्थात उसकी घोषणाओं) और प्रार्थना (मनुष्य की स्थिति) से शुद्ध (अलग किया हुआ) किया गया है। एक बार फिर, मनुष्य की मिली - जुली सोच और मिथ्या शिक्षाएं हमारे अपने सृष्टिकर्ज़ा के संदेश को मानने की आवश्यकता को ही सिद्ध करती हैं!

पाठ 11: प्रचारक की तैयारी (4:6-8)

ज़्योंकि शैतान के धोखे से बचने के लिए हमें परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता है, इसलिए यह काम परमेश्वर के सेवक को ही पूरा करना होगा। पौलुस ने तीमुथियुस से ''भाइयों को इन बातों की सुधि'' (4:6) दिलाते रहने का आग्रह किया। यह कोई विकल्प नहीं बल्कि एक आज्ञा थी। यूनानी शब्द *hupotithemenos* (मूल शब्द *hupotithemi* से, जिसका अर्थ ''तैनात करना या समर्थन करना''[8] है) एक वर्तमान, मध्य कृदंत है; से पौलुस के कहने का अर्थ था कि, ''हे तीमुथियुस, अपने आप शुरुआत कर और भाइयों को सिखाने और समर्थन देने के इस काम में लग जा।''

सुसमाचार प्रचारकों को मसीही लोगों के मनों में परमेश्वर की इन सच्चाइयों को बोने के लिए कहा जाता है ताकि उन्हें सहायता के रूप में सच्चाई मिलती रहे (देखिए इफिसियों 6:14)। यह देखने के लिए कि ''ये बातें'' भाइयों के मनों में ऐसे ही बैठ गई हैं, यह कार्य किसी के अपना जीवन अर्पण करने अर्थात अपनी गर्दन आगे करने की हद तक चला जाता है। रसल ब्रैडली जोन्स ने ध्यान दिलाया कि ''भाइयों'' (यू.: *adelphos*) का अर्थ ''एक ही कोख से'' जन्म लेने वाले होना है।[9] झूठे शिक्षकों के विपरीत, सुसमाचार का असली प्रचारक परमेश्वर के परिवार के सदस्यों के लोगों में जिन्होंने उसके घर में जन्म लिया है सच्चाई के वचन को गहराई तक प्रेम से बोता है (1 तीमुथियुस 3:15)।

ऐसे सेवा करने वाला सचमुच ही मसीह यीशु का ''अच्छा सेवक'' (यू.: *diakonos;* 3:8-13 पर नोट्स देखिए) बन जाएगा।

> ''एक अच्छा सेवक'' वही है जो अपने कार्य के प्रति, अपने लोगों के प्रति और सबसे बढ़कर अपने परमेश्वर के प्रति प्रेम से समर्पित होकर, सच्चाई से दूर होने के विरुद्ध चेतावनी देता और समझाता है कि गलत शिक्षा का सामना कैसे किया जाए। ऐसा व्यक्ति मसीह यीशु का ही प्रतिनिधित्व करता है (और उसका है)।[10]

यही शिक्षा देने वाला सेवक है!

एक ढंग और एक समस्या (आयतें 6, 7)

''अच्छा सेवक'' होने के लिए विश्वास की बातों (बड़ा होने के लिए) और खरी शिक्षा (प्रचार के लिए) से पालन पोषण होना आवश्यक है। इन बातों से ''पालन पोषण''

होने का अर्थ ''शिक्षित करना या मन बनाना'' है।[11] सरसरी पढ़ने से ही किसी का मन नहीं बनाया जा सकता है। इसके लिए गंभीरता से अध्ययन करना व आत्मविश्वास बनाने के लिए प्रयास करना आवश्यक है। पौलुस ने लिखा कि वह स्वयं इसी नमूने के अनुसार कर रहा है। पौलुस द्वारा यहां प्रयुज़्त पूर्णकाल यह संकेत देता है कि इन मामलों में पौलुस परिपज़्वता (पूर्णता) तक पहुंच गया था। उसे अपना मार्ग बदलने की नहीं बल्कि वैसे ही चलते रहने की आवश्यकता थी जैसे वह पहले चल रहा था। जो कुछ वह कर रहा था वह ''मानता'' शज़्द से स्पष्ट हो जाता है।[12] कितना सुन्दर विचार है कि तीमुथियुस जहां भी जाता था खरी शिक्षा और विश्वास की बातें उसके साथ - साथ जाती थीं! तीमुथियुस का पालन पोषण होने के विचार से उस शिक्षा को मानकर उसमें बने रहने की उसके मन की स्वस्थ बनावट और जानकारी का सुझाव मिलता है। हर इवैंजलिस्ट को ऐसा ही होना चाहिए (देखिए 2 तीमुथियुस 2:15)।

शैतान की सबसे बड़ी इच्छा परमेश्वर के वज़्ता को ऐसी सज़्माननीय स्थिति से दूर करने की ही होगी। तीमुथियुस को ''अशुद्ध और बूढ़ियों की सी कहानियों से अलग'' रहने के लिए कहकर पौलुस ने दो ढंगों की ओर ध्यान दिलाया जिनसे ऐसा हो सकता था। पहला, वह तीमुथियुस को *अशुद्ध* कहानियों से *अलग* रहने[13] की चेतावनी दे रहा था। कुछ स्थान और रीतियां ऐसी अशुद्ध होती हैं जिनसे व्यज़्ति का भला होने के बजाय नाश हो जाता है (देखिए 2 कुरिन्थियों 6:17-7:1; 1 पतरस 4:1-5)। इसे भाइयों में या संसार में अशुद्ध बकवास या संदेहपूर्ण आचरण से जोड़ा जा सकता है (गलतियों 5:15; तीतुस 1:9-11; 1 कुरिन्थियों 10:31-33)। दूसरा, पौलुस ने उसे *बूढ़ियों की कहानियों से अलग* रहने की चेतावनी दी।[14] हैंड्रिज़्सन लिखता है कि यह निरर्थक यहूदी किस्से थे, जिनके माध्यम से गलत शिक्षा देने वाले लोग व्यवस्था को चित्रित करने की कोशिश कर रहे थे। ''... वे बेहूदी बातें करने वाले ही हैं और मूर्खतापूर्ण अन्धविश्वासी लोगों में से हैं जिन्हें *बूढ़ी स्त्रियां* कभी - कभी उनके पड़ोसियों या उनके नाती - पोतों के गले मढ़ने की कोशिश करती हैं।''[15] पौलुस बूढ़ी स्त्रियों का पूरा आदर करता था परन्तु यह भी जानता था कि वे एक जवान सुसमाचार प्रचारक के लिए समस्या बन सकती हैं, सो उसने तीमुथियुस को सावधान कर दिया।[16]

पीछा करने वाली लाभदायक बात (आयत 8)

तीमुथियुस के लिए भटकने से बचने के लिए सही मार्ग पर चलते रहना और अपने काम में पूरा संतुलन बनाए रखना आवश्यक था। पौलुस ने शारीरिक अनुशासन से भी बढ़कर भज़्ति की सिफारिश की। पौलुस ने उस समय की प्रचलित भाषा का इस्तेमाल किया। कुछ झूठे शिक्षक शरीर को कठोर दण्ड देकर अनुशासन में रखने की शिक्षा देते थे (कुलुस्सियों 2:20-23) और पौलुस ने आत्मिक सच्चाइयों को समझाने के लिए एथलेटिक में होने वाले मुकाबले का हवाला दिया (रोमियों 9:16; 1 कुरिन्थियों 9:24-27; गलतियों 2:2; 5:7; फिलिप्पियों 2:16; 2 तीमुथियुस 2:5)। पौलुस ने निरन्तर क्रिया का संकेत देते हुए, उसे यह आश्वासन दिया कि भज़्ति के लिए ऐसा कठोर प्रयास उसके लाभ के लिए ही होगा, अनुवादित शज़्द ''साधना''[17]

को वर्तमान काल में डाला। परमेश्वर चाहता है कि अपने शरीरों (याकूब 4:8; 1 पतरस 2:8-16; 1 कुरिन्थियों 6:19, 20), प्राणों (याकूब 1:21-25; 1 पतरस 1:6-9) और आत्माओं (1 कुरिन्थियों 2:11, 12; इब्रानियों 4:12, 13; रोमियों 8:2-15; 12:11; फिलिप्पियों 1:27, 28) की उचित सज़्भाल करें और इसके लिए हमारे सामने कई चुनौतियां देता है। आत्मिक साधना से न केवल हमें इस जीवन में प्रतिफल ही बल्कि अनन्तकाल में प्रवेश करने का आश्वासन भी मिलता है।

भज़्ति के लिए इस विशाल और लाभकारी साधना में सुसमाचार प्रचारक को चाहिए कि परमेश्वर के लोगों के सामने एक नमूना पेश करे। ज़्यों? ज़्योंकि यही उचित है, और सदियों पहले प्रेरितों ने भी हमारे लिए यही मापदण्ड ठहराया था (जो कि पौलुस का अगला विषय था)।

पाठ 12: प्रेरितों का मापदण्ड (4:9-12क)

10 और 11 आयतें इतने ज़बर्दस्त ढंग से असर करती हैं कि इस ''सच और हर प्रकार से मानने योग्य'' बात के हर शज़्द का सावधानीपूर्वक मनन करने की आवश्यकता है (4:9)।

इन लोगों का स्वभाव (आयत 10)

आयत 10 में ''परिश्रम''[18] शज़्द पर ध्यान दें। प्रचारकों के लिए इसी ढंग को अपनाना आवश्यक है। इसमें बोझ, परिश्रम, शोक, प्रचार और प्रोत्साहन का मिश्रण शामिल है जो समय और असमय अर्थात दिन में हो या रात को कभी भी हो सकता है (देखिए 2 तीमुथियुस 4:2-5)। प्रभु के प्रचारक, ज़्या तुमने ऐसा परिश्रम किया है?

''यत्न'' शज़्द पर ध्यान दें।[19] वह साहसी, भज़्ति के लिए निर्धारित मापदण्ड को पाने वाला व्यज़्ति है। प्रचारक, ज़्या तुम ऐसे यत्न कर रहे हो?

प्रेरितों का दृष्टिकोण सकारात्मक था, ''ज़्योंकि ... हमारी आशा उस जीवते परमेश्वर पर है [सामर्थी उपस्थिति] जो सब मनुष्यों का [सामर्थपूर्ण शुद्ध करने वाला; इब्रानियों 7:25], और निज करके विश्वासियों का उद्धारकर्ज़ा है'' (4:10)।[20] इससे हमें अपनी आशा को जीवित रखने के लिए उत्साह मिलना चाहिए। परमेश्वर के सेवक को कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। कुछ लोग निराश करने वाली इन बातों को देखकर आशा छोड़ देंगे। परन्तु परमेश्वर मरा नहीं है, और लोगों का उद्धार होना बन्द नहीं हुआ है। नकारात्मक पहलू का सामना होने पर हमें आशा नहीं छोड़नी चाहिए। यीशु की भविष्यवाणी के अनुसार प्रेरितों ने परमेश्वर की सेवा के लिए दुख उठाया और मर भी गए (मज़ी 24:1-3, 9; 2 तीमुथियुस 4:7, 8, 16-18); परन्तु पौलुस ने उन्हें यहां पर आशा के संदेशवाहक कहा। हर घाटी पर आशा का धनुष लगाने वाले वे कितने अद्भुत मापदण्ड ठहराने वाले थे! प्रचारक ज़्या तुम में स्वर्गीय आशा दिखाई देती है?

पूरी की जाने वाली आवश्यकता (आयतें 11, 12क)

पौलुस ने ज़ोर दिया कि जिस बात की चर्चा वह कर रहा था और जो प्रेरित कर रहे थे उसकी सिफारिश करना और सिखाना आवश्यक है। ''आज्ञा'' (यू.: *paraggelle;* ''उनका ध्यान खींचना'') और ''सिखाना'' (यू.: *didaske;* ''ज़रूरतमंदों को सहायता देना''; प्रेरितों 8:29-35) दोनों ही आदेश सूचक हैं; पौलुस कह रहा था कि (1) इसे करते रहना और (2) किया जाना *आवश्यक है।* असल में उसने तीमुथियुस को बताया कि, ''विश्वास से गिरने, झूठी शिक्षा, सांसारिक कहानियों, जवानी की अभिलाषा [इस विचार को पौलुस ने बाद में विस्तार से बताना था] या कोई भी ऐसी चीज़ जो तुझे इन बातों में दूसरों को आज्ञा देने और सिखाने में रोकती हो आड़े न आने दे!'' (देखिए 3:14, 15; 4:1-12)।

अध्याय 4 किसी भी सुसमाचार प्रचारक के लिए एक चरम वाली चुनौती के साथ समाप्त होता है जिसमें पौलुस ने उम्र के बारे में एक समझदारी भरा अवलोकन किया है। पौलुस ने बुद्धिमज़ा को अज़्सर उम्र से जोड़ा और निष्कर्ष निकाला कि विशुद्धता बड़ी उम्र के कोने में ही मिलती है। यह तथ्य कि लोग ऐसा सोचते हैं इस बात की मांग करता है कि जवान सुसमाचार प्रचारक सावधानी से अपने सज़्मान को बरकरार रखे। पौलुस ने तीमुथियुस को इस आदर्श को मानने की आज्ञा दी ताकि कोई उसे या उसकी जवानी को *तुच्छ*[21] न समझने पाए या उसका तिरस्कार न करे (4:12क)। पौलुस एक ऐसी समस्या को सामने ला रहा था जिस पर प्रचारकों और भाइयों को विचार करने की आवश्यकता है। कुछ जवान प्रचारक उन भाइयों द्वारा ही ''खत्म'' हो गए हैं जो उन्हें निकज़्मे समझते थे या उनके साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करते थे। ऐसा बर्ताव गलत और आहत करने वाला है, परन्तु जवान व्यज़्ति प्रभु के काम को इस तरह से आसानी से स्वीकार कर सकता है जिससे वह भाइयों के मज़ाक का कारण बन जाए।

पौलुस ने तीमुथियुस से कहा, ''कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए ...'' (4:12क)। ''जवानी'' (यू.: *niotetos*) के लिए पौलुस का शज़्द चालीस वर्ष तक की किसी भी उम्र के लिए इस्तेमाल हो सकता है।[22] पौलुस उस गंभीर और ज़िज़्मेदारी के काम के लिए जो उसे पौलुस ने करने को दिया था सचमुच जवान था और उसे हर उम्र के लोगों के साथ सज़्बन्ध बनाना सीखना आवश्यक था। ज़्योंकि तीमुथियुस को दी गई ज़िज़्मेदारियां वही थीं जो आज के जवान सुसमाचार प्रचारक की हैं इसलिए पौलुस की यह चेतावनी बहुत ही व्यावहारिक है।

पाठ 13: प्रचारक का संक्षिप्त जीवन चरित्र और उद्देश्य (4:12ख-16)

जवान सुसमाचार प्रचारक द्वारा ठहराए जाने वाले आदर्श[23] उसके चरित्र, उसके व्यवहार, उसकी चिंता और उसके अभिषेक से सज़्बन्धित हैं।

उसका चरित्र (आयत 12ख)

तीमुथियुस ने पांच तरह से एक आदर्श बनना था:

वचन अर्थात बातचीत में
चाल चलन अर्थात सेवा में
प्रेम अर्थात सेवा करने वाले मन में
विश्वास अर्थात पवित्र शास्त्र की बातों में बने रहकर
पवित्रता अर्थात अपने जीवन के पाप रहित होने में

इस सूची में संक्षिप्त रूप से उन सभी सिद्धांतों को समेटा गया है जो एक सुसमाचार प्रचारक के रूप में काम करते हुए एक जवान आदमी के सामने आएंगे। इसमें जीवन के सब क्षेत्रों के लिए ज़िम्मेदारी सौंपी गई है।

प्रचार करना अर्थात ''वचन में'' (यू.: *en logo*)। यही यूनानी शब्द 1 तीमुथियुस 5:17 में ऐल्डरों के सम्बन्ध में फिर मिलता है। वहां इसका अर्थ और विस्तार से समझाया जाएगा। यहां पर उस संदर्भ में इसके इस्तेमाल की व्याख्या करने में सहायता मिलती है। यह वाक्यांश एक सुसमाचार प्रचारक के जीवन की मुख्य बात बताता है। उसे अनन्त विषयों और लोगों की निजी आवश्यकताओं के विषयों पर सार्वजनिक रूप से और घर – घर बताते रहना चाहिए। वह *जो* कुछ कहता है और *जैसे* कहता है उससे बहुत से लोगों का ध्यान खिंचेगा।

कर्म अर्थात ''चाल चलन में।''[24] यह ठप्पे का ऊपरी रंग है ''मैं तुम्हारी बात नहीं सुन सकता क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम क्या हो।'' इसे उल्टा करने पर, हम देखते हैं कि लोग यीशु की बात पर ध्यान क्यों देते थे। मसीह के जीवन की परछाई हमेशा उसके उपदेश के आगे रहती थी। उसके पदचिह्नों पर चलने वाले सब लोगों के लिए भी यही बात सत्य है!

स्वभाव अर्थात ''प्रेम में।''[25] परमेश्वर और मनुष्यों में समर्थन पाने वाला जीवन जीने के लिए भावुकता की आग होनी आवश्यक है। प्रेम हमें ऐसा आचरण करने के लिए प्रेरित करता है कि हमारा जीने का ढंग निष्कपट और अच्छी मिसाल बन जाए (यूहन्ना 13:34, 35; 1 कुरिन्थियों 13:1–8)।

दृढ़ता अर्थात ''विश्वास में।'' विश्वास से बोलने, जीवित रहने और प्रेम करने के किसी के निश्चय में दृढ़ रहने के लिए ईश्वरीय प्रेरणा मिलती है। यह व्यक्ति को वर्तमान परीक्षाओं के सामने अनन्त विजय के लिए देखने के योग्य बनाता है (याकूब 1:2–4; रोमियों 8:22–25; इब्रानियों 11:9–19)।

शालीनता अर्थात ''पवित्रता में।''[26] यहां हमें अन्य सभी विशेषताओं का सार मिलता है। यदि सुसमाचार प्रचारक का बोलचाल, जीवन, प्रेम या विश्वास निष्कपट नहीं है तो उसका चरित्र मैला और उसका उदाहरण खत्म हो जाता है। पवित्र शास्त्र निष्कपटता की आवश्यकता पर ज़ोर देता है (1 पतरस 1:22; 1 तीमुथियुस 1:5)।

पौलुस ने तीमुथियुस को इन सब बातों में एक नमूना बनने की चुनौती दी। इस चुनौती

को स्वीकार कर सकने वाले प्रचारक का जीवन कितना शानदार होगा और वह कितना अच्छा काम कर पाएगा!

उसका चाल - चलन (आयत 13)

पौलुस ने सुसमाचार प्रचारक अर्थात इवेंजलिस्ट के चाल चलन के सम्बन्ध में तीन आदेश दिए। हर आदेश के साथ उसने ''कैसे करना'' के निर्देश जोड़े हैं।

उचित चाल चलन के लिए पहली मुख्य बात ''पढ़ना'' है।[27] इसमें रोज़ बाइबल पढ़ने वाला होने से कहीं अधिक होने की आवश्यकता है। जो पौलुस ने चाहा था उसे पाने के लिए, खोज, शब्दों के अध्ययन, याद करने, मनन करने और समीक्षा करनी आवश्यक होगी। यह काम शांतचिज़ होकर सीखने वाले के लिए नहीं है, क्योंकि उसे ''वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम'' करना पड़ेगा (1 तीमुथियुस 5:17)।

भक्तिपूर्ण चाल चलन के लिए दूसरी मुख्य बात ''उपदेश'' है।[28] हर प्रकार की मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, सांत्वना देने, दिलासा देने, हाथ फैलाने, बिनती करने, प्रार्थना करने, उत्साहित करने, निर्देश देने और ताड़ना करने की आवश्यकता पड़ेगी। अब तीतुस 1:9 मिला लें, जिसमें यह ऐलान है कि ये उपदेश ''खरी शिक्षा से'' दिए जाने चाहिए। इसके लिए सच्चाई का ज्ञान कितना आवश्यक है! क्या किसी को इस बात पर संदेह है कि परमेश्वर का वचन इन सभी आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है? कितने सुसमाचार प्रचारक सच्चाई को इतनी अच्छी तरह जानते हैं कि वे एक को सांत्वना, दूसरे को प्रोत्साहन, और किसी और को निर्देश देकर आवश्यकता के अनुसार चेतावनी दे सकें और यह सब खरी शिक्षा से हो?

चाल चलन की पौलुस की तीसरी मुख्य बात ''सिखाना'' है।[29] लूका 6:40 इस पर गंभीर टिप्पणी करता है कि सिद्ध होने वाला अपने गुरु के समान ही होगा। मत्ती 10:25 इसमें जोड़ता है कि चेले के लिए गुरु के बराबर होना ही काफ़ी है। सचमुच, गुरु के लिए सबसे बड़ा सेवक और वक्ता होना आवश्यक है। *कितने गुरु अर्थात शिक्षक और सुसमाचार प्रचारक इस चुनौती पर पूरा उतरते हैं?*

इन तीनों चुनौतियों की भूमिका ''लौलीन रहने'' की आज्ञा से दी गई है।[30] पीछे मुड़कर इन तीनों मुख्य बातों पर जो अभी - अभी दी गई हैं इस धारणा को लागू करें। ऐसे चाल - चलन पर सावधानी से ध्यान देने वाला सुसमाचार प्रचारक अपने आप को कभी काम के बिना नहीं पाएगा!

स्पष्टतया एक सुसमाचार प्रचारक के लिए परमेश्वर के वचन को गहराई से जानने का मापदण्ड ठहराना कितना आवश्यक है। इसलिए आइए हम उन पांच ढंगों की समीक्षा करते हैं जिनसे हम परमेश्वर के वचन को जान सकते हैं:

1. हम में उसके वचन को जानने की इच्छा होनी आवश्यक है (यूहन्ना 7:17)।
2. हमें इसे वैसे ही ग्रहण करना चाहिए जैसे यह है, *परमेश्वर के वचन* के रूप में (1 थिस्सलुनीकियों 2:13; 2 पतरस 1:20, 21)।

3. हमारे लिए इसे केवल सुनना ही काफ़ी नहीं है, बल्कि करना भी ज़रूरी है (याकूब 1:23-25)।

4. हमारे लिए आशीष पाने के लिए परमेश्वर के वचन का मनन करना आवश्यक है (भजन संहिता 1:1-3; 119:52, 55, 56)।

5. इसमें बने रहना आवश्यक है (यूहन्ना 8:31, 32)।

उसका ध्यान (आयत 14)

सुसमाचार प्रचारक के चरित्र व चाल चलन को इतना विशालकाय काम सौंपने के बाद, पौलुस ने अपनी बिनती में एक गंभीर बात भी जोड़ दी: ''... निश्चिंत मत रह।''[31] *निश्चिंत होने में, हमें एक सुसमाचार प्रचारक की असफलता के चार कारण मिलते हैं।* पौलुस की आज्ञाओं से निश्चिंत रहने वाला अर्थात उनकी उपेक्षा करने वाला व्यक्ति (1) ध्यान नहीं देगा, (2) सुनेगा नहीं, (3) परवाह नहीं करेगा, (4) तैयार नहीं होगा। *प्रचारक, इनमें से तुम्हारी क्या कमज़ोरी है?*

इस संदर्भ में जिस विशेष उपेक्षा की ओर पौलुस ने ध्यान दिलाया वह ''आत्मिक दान'' से सम्बन्धित है। यह दान, जो भविष्यवाणी द्वारा दिया गया था (देखिए 2 तीमुथियुस 1:6), *ईश्वरीय स्वीकृति* को दिखाता था। यह प्राचीनों के हाथ रखने से दिया गया था, जो कि *मनुष्यों की स्वीकृति* को दिखाता था (प्रेरितों 13:1-3; 1 तीमुथियुस 5:22)। ऐसे दान की उपेक्षा करना गलत था।

हर सुसमाचार प्रचारक को चाहिए कि वह परमेश्वर के अनुग्रह और मनुष्य की भलाई के द्वारा दी गई स्वीकृति के सम्मान की खोज में रहे। पौलुस ने मसीही लोगों से सेवा करने के इस अवसर का सम्मान करने की अन्तिम बिनती की।

उसका अभिषेक (आयतें 15, 16)

इस अध्याय में जिस चरित्र और चाल चलन की मांग की गई है उसके लिए ''सोचता'' रहना और इन सिद्धांतों में ''ध्यान'' लगाना आवश्यक है।[32] पुन:, पौलुस द्वारा प्रयुक्त क्रिया का वर्तमान रूप *इसे करते रहना* पर ज़ोर देता है, और आदेश सूचक इस बात पर ज़ोर देता है कि *इसे किया जाना आवश्यक है*। काम की गंभीरता इस शब्द के अर्थ में देखी जाती है, जिसमें ''करने के योग्य'' होने का विचार शामिल है। यह सचमुच पौलुस की बिनती से मेल खाता है। यदि कोई देख न रहा होता तो इसे करने की आवश्यकता नहीं होनी थी। परन्तु पौलुस जानता था कि एक प्रचारक का प्रभाव सच्चाई और शुद्धता से लोगों में प्रसिद्ध होना चाहिए। मसीहियत में, उदाहरण और मापदण्ड ठहराने वाले, ज़रूरतमंद लोगों के जीवनों के आकर्षण का केन्द्र होते हैं। परमेश्वर के लोगों का व्यवहार लोगों को आकर्षित करने वाला होना चाहिए।

परमेश्वर के लोग जब काम करते हैं तो उनकी ''उन्नति[33] सब पर प्रगट हो'' जाती है। यह ध्यान देना अच्छा है कि इस शब्द के क्रिया रूप का अर्थ ''हथौड़ा मारकर बड़ा करना''

है। पौलुस को अपनी देह को मारना कूटना पड़ा था (1 कुरिन्थियों 9:27)। थॉमस एडिसन का अवलोकन कि ''आविष्कार [उन्नतियां] प्रेरणा के बजाय पसीना बहाने से अधिक मिलते हैं'' उपयुक्त लगता है। किसी और ने कहा है कि मूल विचार का जन्म सबसे अधिक पीड़ादायक होता है। तथ्य यह है कि उन्नति का लोगों में पता चलने के लिए सचमुच गंभीरता और समर्पण आवश्यक है।

इसके अलावा, इस संदर्भ में परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए संक्षिप्त जीवन चरित्र से किसी की उन्नति का भी सम्बन्ध है। लोक सम्पर्क की सीढ़ी के लिए कल्पित विकास की सीढ़ी पर निर्भर नहीं रहा जा सकता। हमें जीवन बदलने वाली सच्चाई के बजाय कानों को अच्छा लगने वाले विचार प्रस्तुत करके प्रसिद्धि पाने की खोज नहीं करनी चाहिए (देखिए 2 तीमुथियुस 4:1-5; रोमियों 12:1, 2)।

सुसमाचार की उन्नति लोगों द्वारा और परमेश्वर द्वारा उसके जीवन और संदेश से परखी जाएगी। पौलुस ने आयत 15 में तीमुथियुस को बताया कि, ''अपनी और अपने उपदेश की चौकसी कर।'' इस सेवा को दिए गए महिमापूर्ण उद्देश्य अर्थात ''उद्धार'' को सुनिश्चित करने के लिए चौकसी करना आवश्यक है।[34]

इसमें सचमुच एक सिद्ध व्यवस्था से एक सिद्ध योजना दी गई है। परमेश्वर की प्रेरणा द्वारा दिए गए पौलुस के निर्देश को मानकर अपने और अपने सुनने वालों के लिए ''उद्धार का कारण'' बना जा सकता है।[35]

संक्षेप में

संक्षेप में, अध्याय 2 से लेकर यहां तक, जो कुछ पौलुस ने हमारे साथ साझा किया है वह इस प्रकार है:

परमेश्वर ने, जो चाहता है कि सब लोग उद्धार पाएं और सच्चाई के ज्ञान तक पहुंचें (2:4), इसे सम्भव बनाने के लिए अपनी योजना बताई है। तीमुथियुस को दिए गए पौलुस के निर्देश को कि पुरुषों व स्त्रियों से कैसे बर्ताव करना चाहिए, को मानकर अगुआई के लिए तैयार होने वाले (3:1-15) भक्त लोग (2:1-5) इसे पा लेते हैं।

ये लोग परमेश्वर के निर्देशों के उन तक पहुंचने और प्रेरितों द्वारा दिए गए उदाहरणों के कारण (4:6-11), दूसरों को गुमराह करने के शैतानी प्रयासों को रोकने में भी सक्षम हैं (4:1-5)।

एक महत्वपूर्ण ढंग वे सुसमाचार प्रचारक होंगे जिनका चरित्र, चाल-चलन, ध्यान और अभिषेक उस आत्मा में परमेश्वर के वचन के साथ मेल खाएगा जिससे बोलने वाले और पापी दोनों का ही उद्धार सुनिश्चित होगा (4:12-16)।

सुसमाचार को फैलाने के लिए परमेश्वर की योजना पहली सदी में रंग लाई (कुलुस्सियों 1:23; प्रेरितों 19:10; 20:18-32), और यह उसी सामर्थ से *किसी भी सदी में* जहां भी परमेश्वर के सेवक इन महान और महिमामय सिद्धांतों को लागू करेंगे, काम करेगी!

पाद टिप्पणियां

[1]''बहक जाएंगे'' (यू.: *apostasontai*) भविष्य, सांकेतिक, मध्यवर्ती है। मध्यवर्ती स्वर संकेत देता है कि उन्होंने ऐसा अपने साथ किया। यह बहकना कैल्विनवादी विचारधारा की किसी भी बात का विरोध है कि इस बात में उनकी अपनी कोई इच्छा नहीं थी। हर किसी की अपनी ही इच्छा होती है; दुख की बात है कि कुछ लोग इस इच्छा का इस्तेमाल विश्वास से बहकने के लिए करते हैं! [2]''बहकना'' के लिए यूनानी शब्द *aphistemi* है जिसका अर्थ है ''दूर करना, हटने का कारण बनना, दूर जाना ... विश्वासहीन होना। ...'' (सी. जी. विल्के एण्ड विलिबल्ड ग्रिम्ज़, *ए ग्रीक इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. व संशो. जोसेफ एच. थेयर [एडिनबर्ग, स्कॉटलैण्ड: टी. एण्ड टी. क्लार्क, 1901; रीप्रिंट संस्क., ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1977], 89)। [3]भरमाने वाला (यू.: *planos*) – ''... भटकाना, उद्देश्यहीन रूप से विचरण करना, गुमराह करना, गलती करवाना ... घुमज़्कड़, मारा मारा फिरना, कपटी, ... दूषित करने वाला,धोखेबाज़'' (थेयर, 515)। [4]दुष्टात्मा (यू.: *daimonion*) – ''शैतान, अशुद्ध आत्मा ... इन आत्माओं को स्वर्ग से फैंके हुए स्वर्गदूत दिखाया गया है, 2 पत. 2:4; यहूदा 6; और अब वे शैतान के वश में हैं और शैतान उनका राजकुमार हैं। ... उन्हें आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ के लिए कज़्ज़े में किया गया था, परन्तु भलाई के लिए नहीं ... मूर्च्छित करने वाला पागलपन, मज़ी 8:28; मरकुस 5:2; ... लूका 8:27'' (एडवर्ड रोबिन्सन, *ए ग्रीक एण्ड इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* [न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1863], 155-56)। [5]भोजन (यू.: *broma*) – ''खाद्य-पदार्थ, भोजन, अर्थात ठोस आहार [दूध जैसा नहीं], 1 कुरिं. 3:2 ... मूसा की व्यवस्था द्वारा निषेधित खाए जाने वाले मांस, इब्रा. 9:10; 13:9. वह मांस भी जिसे यहूदी मसीही खाने से संकोच करते थे, रोमि. 14:15 ... 20; 1 कुरिं. 8:13'' (रोबिन्सन, 133)। [6]विलियम बार्कले, *द लैटर टू तिमोथी, टाइटस एण्ड फिलेमोन,* द डेली बाइबल सीरीज़, संशो. संस्क (फिलाडेल्फिया, वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1960), 108-9. [7]वहीं, 108. [8]तैनात करना (यू.: *hupotithemi*) – ''के नीचे ठहराना या रखना, नीचे लेटना ... समर्थन करना ... बात के नीचे अपनी गर्दन रखना ... अपनी जान जोखिम में डालना ... किसी के भी मन में लाना, सुझाव देना, एक शिक्षक की तरह दिमाग में डालना'' (रोबिन्सन, 752)। [9]रसल ब्रेडले जोन्स, द *एपिस्टल्स टू तिमोथी* (ग्रैंड रेपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1960), 34-35. [10]विलियम हैंड्रिज़्सन, *ए कमैन्ट्री ऑन 1 एण्ड 2 तिमोथी एण्ड टाइटस* (लंदन: द बैनर ऑफ़ ट्रुथ ट्रस्ट, 1964), 149.

[11]पालन पोषण (यू.: *entrepho*) – ''शिक्षित करना; मन बनाना'' (थेयर, 219)। [12]मानना (यू.: *parekolouthkas,* सिद्ध, सांकेतिक, *parakoloutheo* का मध्यम पुरुष एक वचन) – ''पीछे – पीछे चलना, साथ देना ... कोई जहां भी जाए वहां उसके साथ होना ... समझना ... मार्ग पर चलना, अच्छी तरह जांचना, खोज करना ... स्वयं को मिलाना'' (थेयर, 484)। [13]अशुद्ध (यू.: *bebelos*) – ''... साधारण, अपवित्र स्थान'' (रोबिन्सन, 125)। [14]कहानी (यू.: *muthos*) – ''मिथ्या, पौराणिक कथा, दंत कथा। देखिए 1 तीमु. 1:4; 2 तीमु. 4:4; तीतु. 1:14'' (रोबिन्सन, 462)। [15]विलियम हैंड्रिज़्सन, *ए कमैन्ट्री ऑन 1 एण्ड 2 तिमोथी एण्ड टाइटस* (लंदन: द बैनर ऑफ़ ट्रुथ ट्रस्ट, 1964), 150. [16]एक जवान सुसमाचार प्रचारक को कम से कम तीन तरह से बूढ़ी स्त्रियों से नुज़्सान हो सकता है: (1) यह सोचकर कि वे बूढ़ी और समझदार हैं (जबकि हो इसके विपरीत) वह उनकी परज़्परा को ऐसे मान सकता है जैसे वह परमेश्वर का वचन ही हो। एक बूढ़ी बहन ने एक जवान प्रचारक को ''अंतिम प्रार्थना'' के बजाय आराधना सभा को गीत के साथ समाप्त करने के लिए दबाव डाला। (2) वह उनके द्वारा की गई अपनी प्रशंसा से खुश हो सकता है (''आप छोटी सी उम्र में कितने बड़े सेवक बन गए हैं!'') यदि वह यह ध्यान न रखे कि उसने सुसमाचार सुनाने का काम अच्छी तरह किया है। मापदण्ड के रूप में प्रचारक को यीशु को नज़रअन्दाज नहीं करना चाहिए, ज्योंकि मापने की असली आत्मिक छड़ी तो वही है (2 कुरिन्थियों 13:5)। (3) हो सकता है कि वह आवश्यक काम को बीच में ही छोड़कर बीते दिनों की बातें सुनाना पसन्द करने वाली बूढ़ी स्त्रियों के साथ समय गंवाता हो। जो प्रचारक विधवाओं के पास बैठकर उनकी बातों की ओर ध्यान देता है उनकी नज़र में वह महान ही होगा, परन्तु उम्र ने उन्हें धीमी बना दिया है जबकि *प्रचारक को ऐसा नहीं होना चाहिए!* सुसमाचार प्रचारक के लिए ऐसा संतुलन

ढूंढ़ना चाहिए जिससे न तो बुज़ुर्गों की अनदेखी हो (1 तीमुथियुस 5:1, 2) और न ही अध्ययन तथा सेवा करने के उसके काम में कोई रुकावट पड़े। [17]साधना (यू.: *gumnazo*) – ''शरीर या मन का सचमुच में भक्तिपूर्वक जीने की इच्छा करने वाले का कठिन अज़्यास'' (थेयर, 122)। [18]परिश्रम (यू.: *kopiao*) – ''परमेश्वर के राज्य और मसीह के प्रचार और प्रसार में शिक्षा के प्रयासों में थकना, [परिश्रम, बोझ या शोक से] चूर होना'' (थेयर, 355)। [19]यत्न (यू.: *agonizomai*) – ''जिमनास्टिक के खेलों में प्रतियोगिता करना ... सुसमाचार के विरुद्ध कठिनाइयों और संकटों से संघर्ष करना। ... पूरी ताकत से कोशिश करना, कुछ पाने का यत्न करना'' (थेयर, 10)। [20]इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर उन लोगों का उद्धार कर देगा जो विश्वास नहीं रखते (देखिए इब्रानियों 11:6)। पौलुस के ''निज करके विश्वासियों'' कहने के विलक्षण ढंग की तीन व्याज़्याएं मिलती हैं। पहली, शायद पौलुस इस तथ्य की ओर ध्यान दिला रहा था कि कुछ लोगों ने अभी विश्वास नहीं किया परन्तु सीखकर वे विश्वास कर लेंगे (देखिए यूहन्ना 9:35, 36; लूका 23:34 की तुलना प्रेरितों 2:36-41 से करें)। दूसरी, हैंड्रिज़्सन ने एक व्याज़्या दी जो विचार करने के योग्य है। उसने कहा कि उद्धारकर्ज़ा (यू.: *soter*) के रूप में परमेश्वर ने सचमुच लोगों को कई तरह से (पाप के अतिरिज़्त) छुड़ाया या उनका उद्धार किया है। उसने इस्राएल को दासता से छुड़ाया, परन्तु दासता से छुड़ाए जाने वाले सभी लोग प्रतिज्ञा किए हुए देश में नहीं जा पाए (1 कुरिन्थियों 10:5; इब्रानियों 3:7-4:8)। कुछ लोग अपने अविश्वास के कारण उसमें प्रवेश नहीं कर पाए। सो पाप से उद्धार तो हो सकता है (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:38-47), परन्तु बाद में विश्वास से इस तरह गिरना सज़्भव है कि अन्त के दिन यह पता चले कि वह उद्धार पाने के लिए तैयार ही नहीं था (देखिए इब्रानियों 6:4-6; 10:23-31)। विश्वास को बनाए रखना आवश्यक है ज़्योंकि इसी से संसार पर विजय मिलती है (1 यूहन्ना 5:4; प्रकाशितवाज़्य 2:10)। इसलिए इस विचार का ज़ोर कई तरह से उद्धार करने की परमेश्वर की क्षमता है परन्तु उसका सबसे मुज़्य काम विश्वासियों का अनन्तकाल के लिए उद्धार करना होगा (देखिए इब्रानियों 7:25; 5:8, 9)। तीसरी, यूनानी वाज़्यांश पर ध्यान दें। हिन्दी या अंग्रेजी अनुवाद से शायद हम उलझन में पड़ जाएं। अर्ड्ट और गिंगरिक ने इस शज़्द का अर्थ ''विशेष करके'' या ''विशेषतया'' (यू.: *malista*) बताया है जैसे कि कई बार ''किसी प्रश्न के उज़र में'' जोड़कर ''विशेषतया, नि:संदेह या निश्चित तौर पर कहा जाता है'' (वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक इंग्लिश लैज़िसकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर अरली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 2रा संस्क. संशो. विलियम एफ़ अर्ड्ट एण्ड एफ़ विल्बर गिंगरिक [शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957], 490)। कुछ पद जहां वह परिभाषा उपयुज़्त होगी ये हैं प्रेरितों 26:3; 20:38; 1 तीमुथियुस 5:17; फिलेमोन 16. यदि हम इसकी परिभाषा इस प्रकार देते हैं, तो यूनानी वाज़्यांश (*malista piston*) का अर्थ कि परमेश्वर का ''निश्चित तौर पर विश्वासियों का'' या ''नि:संदेह विश्वासियों का'' या ''विशेषतया विश्वासियों का'' (या विशेष तौर पर, मेरे कहने का भाव विश्वासियों का है) लोगों का उद्धार करना होगा। सब लोगों में से, इन्हीं का उद्धार होगा। ऐसी निश्चितता बाइबल के तथ्यों से मेल खाती है। इन तीनों विचारों में से किसी में भी यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि अनन्तकाल तक परमेश्वर उन लोगों का उद्धार कर सकता है जिन्होंने विश्वास नहीं किया। ऐसा विचार इब्रानियों 11:6; 5:8, 9 या यूहन्ना 8:24 के विपरीत है।

[21]तुच्छ (यू.: *kataphroneito, kataphroneo* का आदेशसूचक) – ''नीचा समझना, तुच्छ जानना, उपहास करना, त्रिस्कारपूर्ण व्यवहार करना ... घटिया समझना, गलत विचार रखना ...'' (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 421)। [22]हैंड्रिज़्सन ने यह जोड़ते हुए कि इरेनियुस ने जीवन का पहला चरण (जवानी) तीस से चालीस वर्ष माना, अनुमान लगाया कि तीमुथियुस की उम्र 34 से 39 वर्ष के बीच होगी (हैंड्रिज़्सन, 157) इरेनियुस *अगेंस्ट हेयरसिस* 2.22. [23]''आदर्श'' के लिए यूनानी शज़्द *tupos* है, ... दिखाई देने वाला प्रभाव ... चिह्न, ... नकल, आकृति, रूप ... सिखाने का ढंग ... नैतिक जीवन, आदर्श, नमूने में मिसाल ... [अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 837-38]। कुछ लोगों के लिए एक जवान सुमाचार प्रचारक इनमें से कई कुछ होगा। इतने लोगों के लिए इतना महत्वपूर्ण होना एक गंभीर चुनौती है। [24]चाल चलन (यू.: *anastrophe*) – ''हमें अपने सारे चाल चलन में पवित्र होना चाहिए, 1 पतरस 1:15'' (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 61)। [25]प्रेम (यू.: *agape*) – ''लगाव, सदिच्छा ... परोपकार ... परमेश्वर के प्रति लोगों का प्रेम ... लोगों के प्रति परमेश्वर का प्रेम ... मसीह

के प्रति परमेश्वर का प्रेम ... लोगों के प्रति मसीह का प्रेम ...'' (थेयर, 4)।[26]पवित्रता (यू.: *hagneia*) - ''पाप रहित जीवन'' (थेयर, 7); ''शुद्ध मन ... सादगी ... पूरी शुद्धता से ... जवान के पहले फर्ज़ के रूप में ... पवित्र बनने का पीछा करता रहना'' (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 10)।[27]पढ़ना (यू.: *anaginosko*)- ''... अच्छी तरह, संक्षेप में जानना ... फिर जानना, पहचानना ... जानना और अच्छी तरह भिन्नता करना ... पढ़ कर जानना'' (रोबिन्सन, 43)।[28]उपदेश (यू.: *parakaleo*) - ''अपने पास बुलाना, सांत्वना, दिलासा, भीख, विनती, विनय, प्रोत्साहन, निर्देश'' (थेयर, 482-83)।[29]सिखाने वाला (यू.: *didaskalos*) - ''सिखाने के योग्य'' (थेयर, 144); ''शिक्षक, अध्यापक'' (रोबिन्सन, 178)।[30]लौलीन रहना (यू.: *proseche, prosecho* का वर्तमान आदेशसूचक) - ''निकट लाना ... में मन लगाना, ध्यान देना ... के लिए परवाह करना, प्रबन्ध करना ... अपनी रक्षा करना अर्थात सावधान होना ... अपने आपको लगाना, अपने आप को जोड़ना, किसी व्यज्ति या वस्तु को पकड़ना या उससे जुड़ना ... आदी होना ... विचार और प्रयास लगाना'' (थेयर, 546)।[31]निश्चिंत (यू.: *ameleo*) - ''लापरवाह होना, ध्यान न देना ... परवाह न करना, उपेक्षा करना'' (रोबिन्सन, 36)।[32]ध्यान (यू.: *meletao*) - ''... की परवाह करना, किसी का भी ध्यान रखना, कुछ करने के योग्य होने के लिए'' (रोबिन्सन, 449); ''खेती करना, परिश्रम करना ... विचार करना, मनन करना'' (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 501)।[33]उन्नति (यू.: *prokope, prokopto* [थेयर, 540]) - ''... आगे की ओर जाना ... विकास, बढ़ती'' (रोबिन्सन, 621)।[34]उद्धार (यू.: *sozo*) - ''... निकालना, खतरे, हानि, विनाश से बचाकर सुरक्षित रखना ... बीमार लोगों के विषय में ... मृत्यु से बचाना, और इस प्रकार चंगाई देकर, स्वास्थ्य लौटाना ... उद्धार के सज़्बन्ध में अनन्त मृत्यु से अर्थात पाप के कारण होने वाले दण्ड और शोक से बचाना, अनन्त जीवन देना'' (रोबिन्सन, 704)।[35]सुनने वाले के विषय में यहां एक महत्वपूर्ण बात कही गई है। ध्यान दें कि ''सुनना'' शज़्द (यू.: *akouo*) में किसी प्रार्थना सभा में जाने या ''घर में होने वाली बाइबल ज़्लास'' के लिए उपस्थिति होने से कहीं बढ़कर है। इसका अर्थ ''ज़्या बात है या जो कहा गया है उस पर विचार करने.. समझने, उसके अर्थ को अनुभव करने ... सीखने ... प्रेरितों की शिक्षा से मसीह के द्वारा परिचित होने के लिए भाग लेना है, इफि. 4:21 ... ध्यान देना, सुनना ... समझना और सुनना और आज्ञा मानना'' (थेयर, 23)। जो सच्चाई को इस प्रकार सुनता और सुनकर मानता है वही है जिसका उद्धार होगा (देखिए मज़ी 7:21-27; याकूब 1:21-25)।